बाल्यावस्था

बाल्यावस्था (5/6 वर्ष — 12/13 वर्ष)

↓ 5 वर्ष का अन्त और 6 वर्ष का प्रारम्भ

↓ 12 वर्ष का अन्त और 13 वर्ष का प्रारम्भ तक

* उपनाम *

* वैचारिक क्रिया की अवस्था
* मूर्त संक्रियात्मक अवस्था
* जीवन का अनोखा काल
* निर्माणकारी अवस्था
* तार्किक चिंतन की अवस्था
* मूर्त चिंतन की अवस्था
* खेल की अवस्था
* आरम्भिक विद्यालय की आयु







* गंदी अवस्था
* स्फूर्ति की अवस्था
* टोली / समूह की अवस्था

⇒ बाल्यावस्था को गेंग एज कहा जाता है और इसी उम्र में नेता बनने की योग्यता इच्छा रहती है।



⇒ बाल्यावस्था से संबंधित महत्वपूर्ण कथन

कॉल व ब्रुश "बाल्यावस्था को जीवन का अनोखा काल कहा जाता है।"

रॉस → "बाल्यावस्था दृढ़म परिपक्वता या मिथ्या परिपक्वता की अवस्था है।"

किलपेट्रिक → "बाल्यावस्था प्रतिद्वंद्वात्मक समाजीकरण काल है।"

स्टैंग → "शायद ही ऐसा कोई खेल हो जिसे 10 वर्ष का बालक ना खेला हो।"

ब्लेयर, जॉन्स, सिम्पसन "बाल्यावस्था वह अवस्था है जिसमें एक व्यक्ति के बुनियादी दृष्टिकोण मूल्य आदि बहुत सीमा तक निर्धारित हो जाता है।"

⇒ { शैक्षिक दृष्टिकोण से सम्पूर्ण जीवन-चक्र में बाल्यावस्था से अधिक महत्वपूर्ण कोई अन्य अवस्था नहीं है। }

सिगमंड फ्रायड → "बाल्यावस्था को काम की प्रसुप्तावस्था कहा है।"

बर्ट → "बाल्यावस्था भ्रमण व साहसिक कार्य की प्रवृत्ति में वृद्धि होती है।"

स्ट्रेंग → "बालक अपने को अति विशाल संसार में पाता है व उसके बारें में जल्दी से जल्दी जानकारी प्राप्त करना चाहता है।"

⇒ बाल्यावस्था की विशेषतायें

* कार्मकारण में सम्बन्ध स्थापित करना सीख जाता है।
* सामाजिकता और नैतिकता के गुणों में तेजी से वृद्धि होने लगती है।
* रचनात्मक कार्य करना सीख जाता है।
* संग्रहण की प्रवृत्ति विकसित होने लगती है।



* मौन ऊर्जा सुप्त रहती है।

शैशवावस्था ✓
बाल्यावस्था ×
किशोरावस्था ✓

JEEPAK SINGH

* बालक की रूचियों में परिवर्तन होता रहता है।
  - बाल्यावस्था = अभिरुचि परिवर्तन की अवस्था

* भाई-बहनों में झगड़ा
* समूह भावना का विकास
* निरुद्देश्य भटकने की प्रवृत्ति
* आत्मनिर्भरता का होना
* बर्हिमुखी व्यक्तित्व का विकास होने लगता है।
* चोरी करने व झूठ बोलने की आदत विकसित होने लगती है।
* सामूहिक खेलों में रुचि

* संवेगों का दमन एवं प्रदर्शन
* जिज्ञासा की प्रबलता
* वास्तविक जगत से संबंधित



⇒ बाल्यावस्था में शारीरिक विकास

↳ 6 - 12/13 वर्ष

12 वर्ष में



बालक → 138.3 सेमी

बालिका → 139.2 सेमी

↳ प्रति वर्ष 5/6 cm शरीर की लम्बाई में वृद्धि दर

→ आरम्भ
- बालक - बड़े 10.8 cm
- बालिका - छोटी 10.7 cm

→ अन्त
- बालक - छोटे 138.3 cm
- बालिका - बड़ी 139.2 cm

{शरीर की लम्बाई में वृद्धि}



हृदय की धड़कन

	शैशवावस्था	बाल्यावस्था	किशोरावस्था
मांसपेशियां	23-25%	35%	65%
धड़कन	140/प्रतिमिनट	100/प्रति मिनट	72/प्रति मिनट
हड्डियां	270	350	206

शैशवावस्था में संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास

संवेगात्मक विकास :-

↳ EMOTION - लैटिन भाषा के EMOVEDE से बना।

- गति / आवेग
- उत्तेजित दशा

संवेग | भावना | मूल प्रवृत्ति

→ विचारों/भावनाओं का बाह्य प्रकाशन **संवेग** कहलाता है।

→ विचारों का आन्तरिक रूप **भावना** कहलाता है।

DEEPAK SINGH

वुडवर्थ → "संवेग व्यक्ति की गति / आवेश में आने की स्थिति है।"

संवेगों की प्रमुख विशेषतायें :-

* संवेग सार्वभौमिक होते हैं।
* संवेग जन्मजात होते हैं।
* संवेग उत्पन्न होने पर शरीर में परिवर्तन होता है।
  - आन्तरिक
  - बाह्य
* संवेगों के तीव्र होने पर विचार प्रक्रिया धीमी / बंद हो जाती है।
* संवेगों की अभिव्यक्ति व्यक्तिगत होती है।
* संवेगों की प्रकृति अस्थाई होती है।
* भावना ******→ संवेग ←——→ मूल प्रवृत्ति

शैशवावस्था [जन्म] - [5/6 वर्ष]

[वेलेन्टाइन] - "शैशवावस्था सीखने का आदर्श काल है।"

[हरलॉक महोदया] - "शैशवावस्था एक 'खतरनाक काल एवं अपीली काल है।"

[सिगमण्ड फ्रॉयड] - "4-5 वर्ष में बालक वह बन जाता है, जो वह भावी जीवन में बनता है।"

[गुडएनफ] - "व्यक्ति का मानसिक विकास जितना होता है उसका आधा - 3 वर्ष में हो जाता है।"

उपनाम :- * अतार्किक चिंतन की अवस्था
* जीवन का महत्वपूर्ण काल
* खिलौनों की आयु
* अनुकरण द्वारा सीखने की अवस्था
* भावी जीवन की आधारशिला
* संस्कारों के निर्माण की अवस्था

शैशवावस्था की प्रमुख विशेषताएं

* शैशवा अवस्था भावी जीवन को प्रभावित करती है।
  - [शरीर] एवं [मस्तिष्क] अत्यधिक ग्रहणशील होता है।
  - जीवन की आधार होती है।

* IN + FARI - [INFRANT] — यह लैटिन भाषा के शब्द हैं IN+FARI
  IN ↓ अयोग्य, FARI ↓ बोलना ⇒ बोलने की अयोग्य अवस्था

बाल मनोविज्ञान / बाल विकास

बाल मनोविज्ञान - गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक के बालकों का अध्ययन।

बर्क - "बाल मनोविज्ञान बालकों के व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।"

⇒ बर्क ने बालमनोविज्ञान की पहली परिभाषा दी है।

पेस्टालॉजी - बाल मनोविज्ञान से संबंधित
- सर्वप्रथम वैज्ञानिक अध्ययन किया।
- अपने $3\frac{1}{2}$ वर्षीय पुत्र पर अध्ययन
- Baby Biography

स्टेनली हॉल
- सर्वप्रथम प्रश्नावली का निर्माण किया। (बाल मनोविज्ञान में)
- बाल मनोविज्ञान का जनक

क्रो एण्ड क्रो - "20 वीं सदी का काल बालकों का काल है।"

⇒ अमेरिका के न्यूयार्क शहर में सर्वप्रथम बाल सुधार गृह की स्थापना की गई।

⇒ मनोविज्ञान में सर्वप्रथम प्रश्नावली का निर्माण वुडवर्थ ने किया।

* शैशवावस्था में शारीरिक और मानसिक विकास तीव्रता के साथ होता है।

मानसिक विकास - 3 वर्ष — 5/6 वर्ष
↓ ↓
50% 90%

सीखने की दृष्टि से - महत्वपूर्ण अवस्था है।

✓ शैशवावस्था - बाल्यावस्था + किशोरावस्था
↓ ↓ ↓
6 वर्ष 6 वर्ष 6 वर्ष

* शैशवावस्था में जिज्ञासा प्रबल होती है।
* शिशु में शब्दों, वाक्यों एवं क्रियाओं को दोहराने की प्रवृत्ति होती है।
* शैशवावस्था में शिशुओं में असहायता और परनिर्भरता पाई जाती है।
* शैशवावस्था में आत्मप्रेम की भावना पाई जाती है।
* शैशवावस्था में व्यवहार मूल प्रवृत्तियों पर आधारित होता है।
* 2 वर्षों में अधिकांश संवेग विकसित हो जाते हैं।
  └ क्रोध, प्रेम, घृणा भय

क्रिया
- जन्म - शक्तियों
  └ जन्मजात व्यवहार
- भावना
- संवेग
- मूल प्रवृत्ति

* जन्म के समय उत्तेजना नामक संवेग पाया जाता है।

⑥ समन्वय का सिद्धान्त

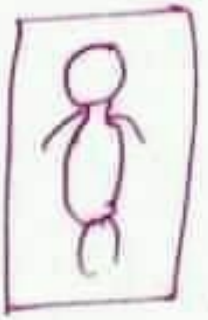
जब तक मानसिक और शारीरिक शक्ति का समन्वय नहीं होगा, तब तक व्यक्ति का विकास नहीं होगा।



अन्तःक्रिया
(समामोजन)

विकास की दर अन्तःक्रिया पर निर्भर होती है।

⑦ सामान्य से विशिष्ट की ओर का सिद्धान्त



पहले हाथों का सामान्य निर्माण होगा, फिर हाथों का विशेष विकास होगा।

⑧ निश्चित पूर्व कथनीय नियम

जो भी विकास आगे होगा है, उसके बारे में निश्चित कथन कह देते हैं।

(i) मस्त बोध मखी नियम

वृद्धि और विकास सिर से पैर की ओर होता है। पहले मस्तिष्क के आस-पास विकास होगा, जैसे- आंखों का विकास। फिर हाथ तथा बाद में पैरों का विकास होगा।

⑥ समन्वय का सिद्धान्त

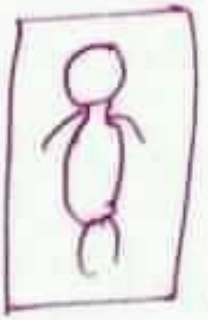
जब तक मानसिक और शारीरिक शक्ति का समन्वय नहीं होगा, तब तक व्यक्ति का विकास नहीं होगा।



अन्तःक्रिया
(समामोजन)

विकास की दर अन्तःक्रिया पर निर्भर होती है।

⑦ सामान्य से विशिष्ट की ओर का सिद्धान्त



पहले हाथों का सामान्य निर्माण होगा, फिर हाथों का विशेष विकास होगा।

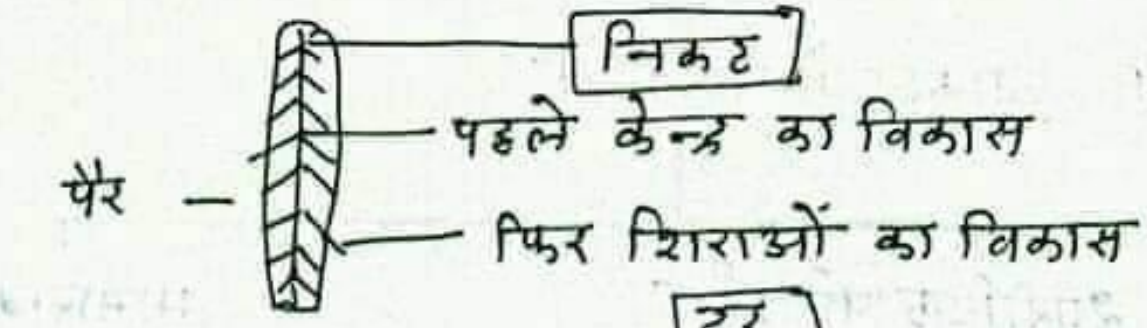
⑧ निश्चित पूर्व कथनीय नियम

जो भी विकास आगे होगा है, उसके बारे में निश्चित कथन कह देते हैं।

(i) मस्त बोध मखी नियम

वृद्धि और विकास सिर से पैर की ओर होता है। पहले मस्तिष्क के आस-पास विकास होगा, जैसे- आंखों का विकास। फिर हाथ तथा बाद में पैरों का विकास होगा।

(ii) केन्द्र से सिरों की ओर



निकट से दूर का विकास

(या)

सामान्य से विशिष्ट की ओर

⑨ वातावरण और वंशानुक्रम की अन्त : क्रिया का नियम

जितना अच्छा वातावरण होता है उतना ही अधिक गुणों का विकास होता है।

फ्रेंक → "प्रत्येक व्यक्ति की जीवन यात्रा एक चौड़ा मार्ग है, जिस पर प्रत्येक व्यक्ति को चलना पड़ता है।"

गैसले → "व्यक्तिगत विभिन्नता का फैलाव उतना है, जितना मानव जाति का है।"

विकास के परिवर्तन

① आकार में परिवर्तन

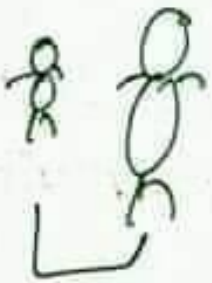
शारीरिक परिवर्तन
└ लम्बाई + चौड़ाई + भार में परिवर्तन

मानसिक परिवर्तन
└ चित्त, चिंतन, मनन, सोच, विचार, बुद्धि सम्प्रत्यय में परिवर्तन

जब सिर्फ शारीरिक परिवर्तन हो तब अभिवृद्धि होती है

⇒ जब शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन साथ में हो तब विकास होता है।

② अनुपात में परिवर्तन



अनुपात

- शारीरिक
- मानसिक
- सामाजिक
- नैतिक
- भाषायी

→ पक्ष

इन सभी में जब परिवर्तन होगा; तब विकास होगा।

- शब्दकोश का बढ़ना
- दाँतों का बढ़ना
- बालों का बढ़ना

विकास की अवस्थायें

* गर्भावस्था — 0 भ्रूण — जन्म = 9 माह 10 दिन
  जन्म = 280 दिन

* शैशव अवस्था ⇒ जन्म → 5/6 वर्ष

* बाल्य अवस्था → 5/6 वर्ष → 12/13 वर्ष

* किशोर अवस्था → 13 वर्ष → 18 वर्ष

* प्रौढ़ अवस्था → 19 वर्ष से ऊपर

मुख्य रूप से 5 अवस्थाएं होती हैं, प्रौढ़ अवस्था बाल विकास में नहीं है।

यह वर्गीकरण मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अलग-2 है।

विकास के पक्ष

* शैशव अवस्था
* बाल्य अवस्था
* किशोर अवस्था

→ शारीरिक विकास
→ मानसिक विकास
→ सामाजिक विकास
→ नैतिक विकास
→ भाषायी विकास

हर अवस्था में प्रत्येक पक्ष का विकास अलग अलग होता है।

* शैशवावस्था में सामाजिकता व नैतिकता का अभाव पाया जाता है।
  - लड़को में पितृ विरोधी ग्रन्थि तथा लड़कियों में मातृ विरोधी ग्रन्थि विकसित होती है।
  - सिग्मण्ड फ्रॉयड - 'काम प्रवृत्ति विकसित होती है।
    - जबकि सभी बाकी मनोवैज्ञानिक इस प्रवृत्ति को शैशवावस्था में नहीं मानते हैं।

शैशव अवस्था :-

शारीरिक विकास

- लम्बाई
  - जन्म के समय → 51 सेमी
    - बालक → 51 सेमी
    - बालिका → 50.5 सेमी
  - अन्त में → 108 सेमी
- मस्तिष्क का भार
  - जन्म के समय - 300 g
  - अंत में → 1250 g
- वजन
  - जन्म → 3 kg
  - 6 माह = दुगुना
  - अन्त में = 16 kg
- हड्डियां
  - शैशवावस्था → 270
  - बाल्यावस्था → 350
  - किशोरावस्था → 206